एनएचईपी प्रायोजित प्रतिवेदन

अकादमिक-उद्योग सम्मेलन

“जलीय पशु स्वास्थ्य प्रबंधन में उद्यमशीलता के अवसर” पर विचार-मंथन सत्र

भा.कृ.अनु.प.-के.मा.शि.सं., मुंबई के जलीय पर्यावरण और स्वास्थ्य प्रबंधन विभाग द्वारा दिनांक 18 जुलाई, 2024 को 'जलीय पशु स्वास्थ्य प्रबंधन में उद्यमशीलता के अवसर' पर एक अकादमिक-उद्योग सम्मेलन और विचार-मंथन सत्र आयोजित किया गया। सम्मेलन का उद्देश्य मत्स्य स्वास्थ्य के छात्रों को उद्यमिता के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करना तथा क्षेत्र में उपलब्ध अवसरों एवं विभिन्न विकल्पों से परिचित कराना था। सम्मेलन में देशभर के विभिन्न मत्स्य कॉलेजों से कुल 17 स्नातकोत्तर छात्रों के साथ-साथ आईसीएआर-सीआईएफई, मुंबई के एईएचएम विभाग के 54 छात्रों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में प्रतिष्ठित उद्योग के साथ-साथ प्रगतिशील किसानों की भागीदारी भी शामिल थी, जिन्होंने छात्रों को जलीय कृषि के लिए प्रेरित करने के लिए क्रमशः उद्यमिता और सफल कृषि गतिविधियों की अपनी यात्रा साझा की। मछली और शंख स्वास्थ्य से जुड़े कुल 11 प्रगतिशील किसानों और 12 प्रतिष्ठित उद्योग कर्मियों ने इंडियन इन्व्यूनोलॉजिकल्स लिमिटेड, हंस एक्वाकल्चर; हाई-जीनोमबी हाइमीडिया लैबोरेटरीज; वेस्ट कोस्ट एक्वेटिक्स; टीओरा लाइफ साइंस प्राइवेट लिमिटेड; मयंक एक्वाकल्चर प्राइवेट लिमिटेड; क्रिस्टा फ्रेश; राफ्टेक सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड; आई एकिरा एक्वा वर्ल्ड; ए-मार्ट एक्वाटिक वर्ल्ड और मर्क एनिमल हेल्थ इंडिया आदि ने जलीय पशु स्वास्थ्य के क्षेत्र में उद्यमशीलता के अवसरों से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर अपनी अनुभव साझा की। उद्योगकर्मियों के अलावा, सहायक आयुक्त डॉ संतोष एम ने छात्रों को संगरोध के महत्व और जीवित मछलियों के आयात और निर्यात नियमों पर ज्ञान प्रदान करने के लिए पशु संगरोध और प्रमाणन सेवाओं (एक्यूसीएस) का प्रतिनिधित्व किया। उद्घाटन सत्र में हमारे सम्मानित मुख्य अतिथि महाराष्ट्र पशु और मत्स्य विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ नितेन वी पाटिल ने शिरकत की। एईएचएमडी की प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. मेघा के. बेडेकर ने स्वागत भाषण दिया, जिसके बाद एईएचएमडी की वैज्ञानिक एवं कार्यक्रम समन्वयक डॉ. जीना के. ने कार्यक्रम का संचालन किया। कार्यक्रम में उद्घाटन भाषण भा.कृ.अनु.प.-के.मा.शि.सं. के संयुक्त निदेशक एवं पीआई डॉ. एन.पी. साहू ने दिया और निदेशक एवं कुलपति डॉ. सी.एन. रविशंकर ने अध्यक्षीय भाषण दिया। महाराष्ट्र पशु एवं मत्स्य विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. नितेन वी. पाटिल ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और उद्घाटन भाषण दिया। सम्मेलन को तीन सत्रों में बांटा गया था।

सत्र 1, 'उद्यमी अवसरों पर उद्योग परिप्रेक्ष्य', सफल उद्यमिता के लिए छात्रों के लिए आवश्यक कौशल, मत्स्य स्वास्थ्य और पर्यावरण के क्षेत्र में वर्तमान अंतराल और अवसर, उद्यमी यात्रा के दौरान अपेक्षित चुनौतियों, क्षेत्र परीक्षणों के संचालन में उद्योग से समर्थन, वित्त पोषण आदि जैसे प्रमुख बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित किया गया। डॉ गायत्री त्रिपाठी, प्रधान वैज्ञानिक, एईएचएमडी विभाग, भा.कृ.अनु.प.-के.मा.शि.सं., मुंबई; डॉ अर्पिता शर्मा, प्रधान वैज्ञानिक एवं विभागाध्यक्ष, एफईईएसडी विभाग, डॉ संतोष एम. सहायक आयुक्त, पशु संगरोध और प्रमाणन सेवाएं, मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय, भारत सरकार, मुंबई; डॉ सुजाता हाजरा, तकनीकी प्रबंधक, हाईजेनॉम्ब, हाइमीडिया प्रयोगशालाओं प्राइवेट लिमिटेड और श्री नितिन निकम, सीईओ और निदेशक, वेस्ट कोस्ट एक्वेटिक्स लिमिटेड सत्र के दौरान पैल विशेषज्ञ थे। डॉ. सौरव कुमार और सुश्री भारती रथिनम ने मॉडरेटर की भूमिका निभाई और डॉ. सलोनी शिवम इस सत्र की रिपोर्टर थीं।

सत्र 2, 'फार्म स्तर की चुनौतियां एवं अवसर' में मुख्य रूप से प्रगतिशील किसानों और उनकी चुनौतियों पर ध्यान केंद्रित किया गया, जिन्हें छात्रों द्वारा अवसरों में बदला जा सकता है। किसानों ने अपने आविष्कारों के क्षेत्र स्तर के परीक्षण के लिए फार्म बुनियादी ढांचा सुविधाएं प्रदान करने और उन्हें व्यावहारिक एक्वाफार्म अनुभव प्रदान करने के मामले में छात्रों को अपना समर्थन दिखाया है। डॉ. मेघा कदम बेडेकर, विभागाध्यक्ष, एईएचएम विभाग; डॉ. देवजीत सरमा, विभागाध्यक्ष, जलकृषि विभाग, डॉ. केदार नाथ मोहंता, विभागाध्यक्ष, मत्स्य पोषण कायिकी एवं जैव रसायन विभाग; श्री हसन म्हासला, प्रोपराइटर, एचएएनएस एक्वाकल्चर और डॉ. अजीत सिंह पाटिल, अध्यक्ष महाराष्ट्र एक्वा

फार्मर्स एसोसिएशन सत्र के पैनल विशेषज्ञ थे। डॉ. जीना के. और डॉ. अरुण शर्मा सत्र के संचालक थे तथा सुश्री आर. भारती रथिनम रिपोर्टर थीं।

सत्र 3 का विषय छात्रों का दृष्टिकोण और एक्का हेल्थ-प्रेन्योरशिप था। सम्मेलन के दौरान कुल 6 मौखिक प्रस्तुतियाँ, 7 पोस्टर प्रस्तुतियाँ और 2 प्रदर्शन मॉडल प्रदर्शित किए गए और विशेषज्ञों द्वारा उनका मूल्यांकन किया गया। सर्वश्रेष्ठ मौखिक, पोस्टर और मॉडल प्रस्तुतियों को छात्र प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र के साथ सम्मानित किया गया। डॉ. एस पी शुक्ला, प्रधान वैज्ञानिक, आईएचएमडी डॉ. मुकुंद गोस्वामी, विभागाध्यक्ष, मत्स्य आनुवंशिकी और जैव प्रौद्योगिकी विभाग, डॉ. पी पटनायक, प्रबंध निदेशक, इंडियन इन्फ्यूनोलॉजिकल्स लिमिटेड, श्री मयंक शर्मा, मयंक एक्काकल्चर प्राइवेट लिमिटेड, और श्री सिद्धार्थ पम्मी, संस्थापक, क्रिस्टा फ्रेश, मुंबई छात्र सत्र के लिए पैनल विशेषज्ञ थे। डॉ. कुंदन कुमार और डॉ. सलोनी शिवम तीसरे सत्र के कार्यक्रम संचालक थे और डॉ. जीना के. सत्र की प्रतिवेदक थीं। प्रत्येक सत्र के बाद पैनल विशेषज्ञों ने सत्र के दौरान चर्चा किए गए प्रमुख बिंदुओं पर अपने इनपुट प्रदान किए और साथ ही उन्होंने छात्रों और अन्य प्रतिभागियों द्वारा उठाए गए प्रश्नों के उत्तर भी दिए। डॉ. मेघा के. बेडेकर ने मुख्य बातों और भविष्य की दिशाओं पर प्रकाश डालते हुए सम्मेलन का सारांश प्रस्तुत किया। सम्मेलन का समापन डॉ. जीना के. के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसमें उन्होंने सम्मेलन की सफलता में योगदान के लिए सभी वक्ताओं, प्रतिभागियों और आयोजकों के प्रति आभार व्यक्त किया। सुश्री आर. भारती रथिनम ने कार्यक्रम का संचालन किया। इस कार्यक्रम का सफलतापूर्वक समन्वयन डॉ. जीना के, डॉ. सलोनी शिवम और सुश्री आर. भारती रथिनम, वैज्ञानिक, आईएचएम प्रभाग द्वारा डॉ. एन.पी. साहू, संयुक्त निदेशक और एनआईएचपी, आईसीएआर-सीआईएफई के प्रधान अन्वेषक और डॉ. मेघा कदम बेडेकर, विभागाध्यक्ष, जलीय पर्यावरण और स्वास्थ्य प्रबंधन प्रभाग, आईसीएआर-सीआईएफई, मुंबई के मार्गदर्शन में किया गया।